कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



कारखानों का उदय

- इंग्लैंड में सबसे पहले 1730 के दशक में कारखाने खुले लेकिन उनकी संख्या में तेज़ी से इज़ाफा 18वीं सदी के आखिर में ही हुआ।
- कपास (कॉटन) नए औद्योगिक युग का पहला प्रतीक थी।
- 19वीं सदी के आखिर में कपास के उत्पादन में भारी बढ़ोतरी हुई।
- 1760 में ब्रिटेन 25 लाख पौंड कच्चे कपास का आयात करता था। 1787 में यह आयात बढ़कर 220 लाख पौंड तक पहुँच गया।
- क्योंकि वहां कपास-उद्योग की जरूरतें बढ़ गई थीं।
- यह इज़ाफा उत्पादन की प्रक्रिया में बहुत सारे बदलावों का परिणाम था।

उत्पादन-प्रक्रिया में बदलाव

- 18वीं सदी में कई ऐसे अविष्कार हुए जिन्होंने उत्पादन प्रक्रिया के हर चरण की कुशलता बढ़ा दी।
- प्रति मज़दूर उत्पादन बढ़ गया और पहले से ज़्यादा मजबूत धागों व रेशों का उत्पादन होने लगा।
- इसके बाद रिचर्ड आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा सामने रखी।
- अभी तक कपड़ा उत्पादन पूरे देहात में फैला हुआ था तथा यह काम लोग अपने-अपने घर पर ही करते थे।
- लेकिन अब मँहगी नई मशीनें कारखानों में लगाकर सारी प्रक्रियाएँ एक छत के नीचे और एक मालिक के हाथों में आ गई थीं।
- अब उत्पादन प्रक्रिया पर निगरानी,
  गुणवत्ता का ध्यान रखना और
  मज़दूरों पर नज़र रखना संभव हो गया था।
- जब तक उत्पादन गाँवों में हो रहा था तब तक ये सारे काम संभव नहीं थे।

कारखाने :-

- 19वीं सदी की शुरुआत में इंग्लैंड में कारखाने भूदृश्य का अभिन्न अंग बन गए थे।
- ये नए कारखाने इतने विशाल, और नई- प्रौद्योगिकी की ताकत इतनी जादुई दिखाई देती थी कि उस समय के लोगों की आँखें चौंधिया जाती थीं।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- लोगों का ध्यान कारखानों पर टिका रह जाता था।
- वे इस बात को मानो भूल ही जाते थे कि उनकी आँखों से ओझल गलियों और वर्कशॉप्स में अभी भी उत्पादन चालू है।

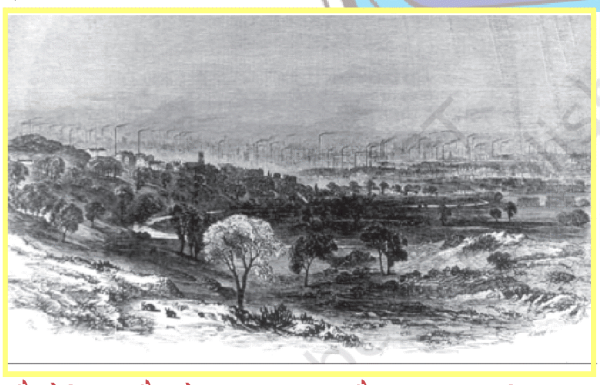
लंकाशायर की एक कॉटन मिल, सी.ई. टर्नर द्वारा बनाया चित्र, दि इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 1925



कलाकार ने कहा : 'अगर उस नम मौसम की नज़र से देखें जिसके कारण लंकाशायर दुनिया में सूत कताई के लिए सबसे आदर्श स्थान बनता है तो शाम के धुँधलके में दमकता कॉटन मिल सबसे शानदार नज़ारा दिखाई देता है।'

औद्योगिक परिवर्तन की रफ्तार

आइये पहले हम औद्योगिक मैनचेस्टर का एक चित्र देखते हैं :-



औद्योगिक मैनचेस्टर : एम जैक्सन का चित्र, द इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज : 1857

धुँआ छोड़ती चिमनियाँ औद्योगिक इलाकों की पहचान बन गई थीं।

- औद्योगीकरण की प्रक्रिया कितनी तेज़ थी? तथा क्या औद्योगीकरण का अर्थ केवल फैक्ट्री उद्योगों के विकास तक ही सीमित होता है?

आइये देखते हैं :-

पहला :-

- सूती उद्योग और कपास उद्योग ब्रिटेन के सबसे फलते-फूलते उद्योग थे।
- तेज़ी से बढ़ता हुआ कपास उद्योग 1840 के दशक तक औद्योगीकरण के पहले चरण में सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था।
- इसके बाद लोहा और स्टील उद्योग आगे निकल गए।
- 1840 के दशक से इंग्लैंड में और 1860 के दशक से उसके उपनिवेशों में रेलवे का विस्तार होने लगा था। फलस्वरूप लोहे व स्टील की ज़रूरत तेजी से बढ़ी।
- 1873 तक ब्रिटेन के लोहा और स्टील निर्यात का मूल्य लगभग 7.7 करोड़ पौंड हो गया था। जो राशि इंग्लैंड के कपास निर्यात के मूल्य से दोगुनी थी।

दूसरा :-

- नए उद्योग परंपरागत उद्योगों को इतनी आसानी से हाशिए पर नहीं ढकेल सकते थे।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- 19वीं सदी के आखिर में भी तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मज़दूरों की संख्या कुल मज़दूरों में 20 प्रतिशत से ज़्यादा नहीं थी।
- कपड़ा उद्योग एक गतिशील उद्योग था लेकिन उसके उत्पादन का बड़ा हिस्सा कारखानों में नहीं बल्कि घरेलू इकाइयों में होता था।

तीसरा :-

- यद्यपि 'परंपरागत' उद्योगों में भी परिवर्तन हो रहा था तथा उनकी गति बढ़ रही थी।
- लेकिन इस गति की भाप से चलने वाले सूती और धातु उद्योगों की गति से तुलना नहीं की जा सकती थी।
- ये परंपरागत उद्योग पूरी तरह ठहराव की अवस्था में भी नहीं थे।

गैर मशीनी क्षेत्रों में :-

- खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, पॉटरी, काँच के काम, चर्मशोधन, फर्नीचर और औज़ारों के उत्पादन जैसे बहुत सारे कामों में साधारण और छोटे-छोटे अविष्कारों से ही तरक्की हो रही थी।

चौथा :-

- प्रौद्योगिकीय बदलावों की गति धीमी थी।
- औद्योगिक भूदृश्य पर ये बदलाव नाटकीय तेज़ी से नहीं फैले।
- नयी तकनीक मँहगी थी। इसलिए सौदागर व व्यापारी इनके इस्तेमाल के सवाल पर फूँक-फूँक कर कदम बढ़ाते थे।
- मशीनें अकसर खराब हो जाती थीं और उनकी मरम्मत पर काफी खर्चा आता था।
- ये मशीनें उतनी अच्छी भी नहीं थीं जितना उनके आविष्कारकों और निर्माताओं का दावा था।

इस बात को समझने के लिए आइए भाप के इंजन का उदाहरण लें।

- जेम्स वॉट ने न्यूकॉमेन द्वारा बनाए गए भाप के इंजन में सुधार किए और 1871 में नए इंजन को पेटेंट करा लिया।
- इस मॉडल का उत्पादन उनके दोस्त उद्योगपति मैथ्यू वूल्टन ने किया। पर सालों तक उन्हें कोई खरीदार नहीं मिला।
- 19वीं सदी की शुरुआत तक पूरे इंग्लैंड में भाप के सिर्फ 321 इंजन थे।
- इनमें से 80 इंजन सूती उद्योगों में,9 ऊन उद्योगों में
  बाकी खनन, नहर निर्माण और लौह कार्यों में इस्तेमाल हो रहे थे।
- बहुत सारे उद्योगों में तो भाप के इंजनों का इस्तेमाल काफी समय बाद तक भी नहीं हुआ।
- यानी मज़दूरों की उत्पादन क्षमता को कई गुना बढ़ाने की संभावना वाली सबसे शक्तिशाली प्रौद्योगिकी को अपनाने में भी उद्योगपति बहुत हिचकिचा रहे थे।
- अब इतिहासकार इस बात को मानने लगे हैं कि 19वीं सदी के मध्य का औसत मज़दूर मशीनों पर काम करने वाला नहीं बल्कि परंपरागत कारीगर और मज़दूर ही होता था।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

इंग्लैंड के एक रेलवे कारखाने में
फिटिंग-शॉप
(द इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज-1849)



इस फिटिंग-शॉप में नए लोकोमोटिव इंजन बनाये जाते थे और पुरानों की मरम्मत की जाती थी।

1830 की एक कताई फैक्ट्री



हम देख सकते हैं कि किस तरह भाप की ताकत से चलने वाले विशालकाय पहिये एक साथ सैकड़ों तकलियों को घुमाने लगते थे।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here